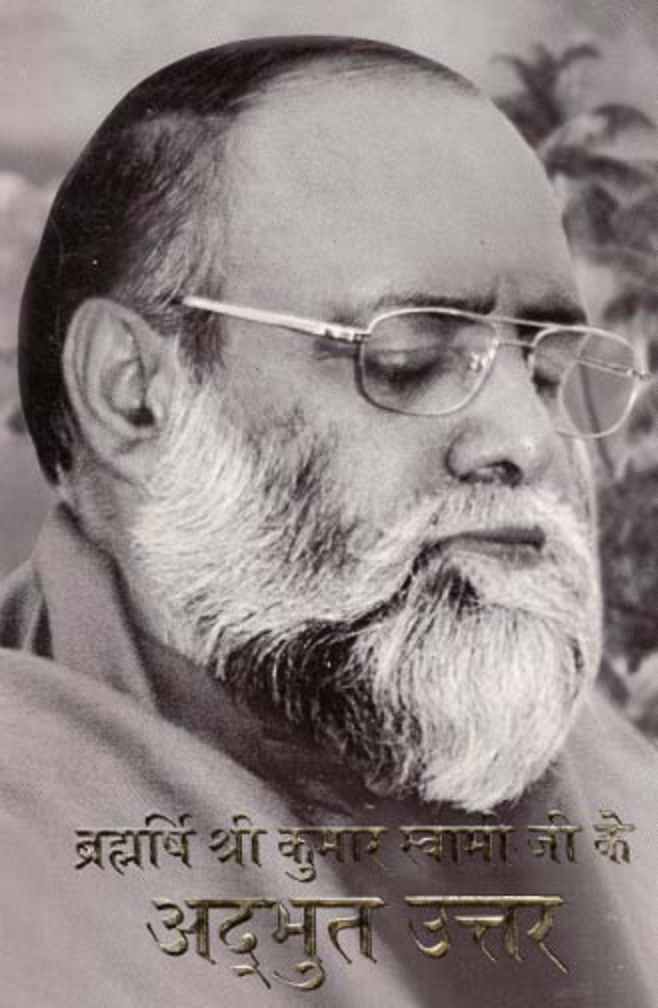

ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी के

अद्भुत उत्तर

भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम
परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी का
राष्ट्रपति भवन में सम्मानित करते हुए

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
	परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी-संक्षिप्त परिचय	i से viii
1	मन के पार जाने की राह	15
2	काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर नियंत्रण के अद्भुत रहस्य	24
3	मोक्ष कैसे पाएं ?	33
4	सद्गुरु की पहचान	40
5	परमात्मा को कैसे पाएं ?	47
6	निष्काम भावना का सच	50
7	दीपक जलाने से रोगों से मुक्ति	54
8	प्रभु का अद्भुत न्याय	59
9	गौ माँ के अद्भुत रहस्य	62
10	पर्वतीय क्षेत्रों के अद्भुत प्रभाव	64
11	गंगा जल का वैज्ञानिक महत्व	71
12	यमुना जल का वैज्ञानिक महत्व	74

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
13	भगवान श्रीकृष्ण के माखन चुराने का रहस्य	77
14	सूर्य कवच के अद्भुत प्रभाव	80
15	वास्तु ज्ञान का सच	82
16	सात दिनों के गोपनीय रहस्य	88
17	नवरात्र के दिनों के अद्भुत रहस्य	92
18	स्त्रियों के लिए उत्तम ध्यान विधि	94
19	ऋतुकाल में स्त्रियों के लिए अद्भुत नियम	97
20	उपचार की अद्भुत विधि का रहस्य	99
21	नीम के अद्भुत रहस्य	103
22	समय और औषधि	106
23	पूर्वजों का जीवन में महत्व	108
24	शुद्ध धन की दिव्यता	111
25	पति-पत्नी के मधुर संबंधों का दैवीय उपाय	114
26	रोगनाशक है बांसुरी की तान	117
27	मदिरा से मुक्ति का दिव्य उपाय	119

परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी

एक संक्षिप्त परिचय

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम विश्व के अद्‌भुत आध्यात्मिक संस्थानों में से एक है। इस कथन के पीछे आधार यह है कि इसके द्वारा आयोजित गतिविधियों में दैवीय विज्ञान का साक्षात् स्वरूप दृष्टिगत होता है। जिसके माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से जन कल्याण के विराट और वास्तविक स्वरूप के दर्शन होते हैं। भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के पथ प्रणेता परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी विश्व भर में आयोजित होने वाले प्रभु कृपा दु:ख निवारण समागमों में हजारों-लाखों प्रभु प्रेमियों के दु:खों, संकटों, रोगों, कष्टों का अद्‌भुत व अति प्रभावशाली दैवीय उपचार करते हैं।

इस दैवीय उपचार का एक साधन शास्त्रोक्त दिव्य रहस्य और मंत्र हैं, जिनके बारे में ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी का कहना है कि ये अद्‌भुत रहस्य और दिव्य मंत्र सभी धर्म शास्त्रों में हैं। ये वेदों में, भगवान महावीर की 'जिनवाणी' में, भगवान बुद्ध के 'धम्मपद' में, कुरान-ए-पाक में, पवित्र बाईबल में, श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में सभी में हैं। इसके अतिरिक्त अन्य धर्मशास्त्रों में भी हैं। मगर इनमें महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अद्‌भुत रहस्य और मंत्र इन शास्त्रों में छुपे हुए हैं। कई अद्‌भुत रहस्य और मंत्र शास्त्रों में विशृंखल (टुकड़े-टुकड़े) रूप से बिखरे हुए हैं। जिनको खोज पाना

परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी

एक संक्षिप्त परिचय

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम विश्व के अद्‌भुत आध्यात्मिक संस्थानों में से एक है। इस कथन के पीछे आधार यह है कि इसके द्वारा आयोजित गतिविधियों में दैवीय विज्ञान का साक्षात् स्वरूप दृष्टिगत होता है। जिसके माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से जन कल्याण के विराट और वास्तविक स्वरूप के दर्शन होते हैं। भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के पथ प्रणेता परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी विश्व भर में आयोजित होने वाले प्रभु कृपा दु:ख निवारण समागमों में हजारों-लाखों प्रभु प्रेमियों के दु:खों, संकटों, रोगों, कष्टों का अद्‌भुत व अति प्रभावशाली दैवीय उपचार करते हैं।

इस दैवीय उपचार का एक साधन शास्त्रोक्त दिव्य रहस्य और मंत्र हैं, जिनके बारे में ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी का कहना है कि ये अद्‌भुत रहस्य और दिव्य मंत्र सभी धर्म शास्त्रों में हैं। ये वेदों में, भगवान महावीर की 'जिनवाणी' में, भगवान बुद्ध के 'धम्मपद' में, कुरान-ए-पाक में, पवित्र बाईबल में, श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में सभी में हैं। इसके अतिरिक्त अन्य धर्मशास्त्रों में भी हैं। मगर इनमें महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अद्‌भुत रहस्य और मंत्र इन शास्त्रों में छुपे हुए हैं। कई अद्‌भुत रहस्य और मंत्र शास्त्रों में विशृंखल (टुकड़े-टुकड़े) रूप से बिखरे हुए हैं। जिनको खोज पाना

२

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर नियंत्रण के अद्‌भुत रहस्य

गुरुदास : परम पूज्य गुरुदेव, इस जगत में चाहे साधारण व्यक्ति हो या कोई संत, सभी के सामने यही स्थिति है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पर नियंत्रण कैसे पाया जाए?

परम पूज्य गुरुदेव : यह प्रश्न जन कल्याण के लिए अति उत्तम है। इस जगत में जितने भी युद्ध हो रहे हैं, झगड़े हो रहे हैं, माता-पिता के, भाई-बहनों के, दोस्तों के, पति-पत्नी के, देशों के, उनका मूल यह पांचों तत्वों का वास्तविक अर्थ न जानना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन तत्वों को खराब कहना या इन तत्वों को अच्छा कहना, इसी से सारे विवाद हैं। इसी से आज सारे जगत में युद्ध हो रहे हैं। अगर कोई व्यक्ति इन तत्वों को जान ले, जैसे कोई चिकित्सक है वह रोग के मूल कारण को जानता है। क्योंकि कारण जानने के लिए उन्हें कितने-कितने टैस्ट कराने

५

परमात्मा को कैसे पाएं ?

गुरुदास : परम पूज्य गुरुदेव, यह जिज्ञासा है कि किस प्रकार से परमात्मा की प्राप्ति की जाये? गुरुदेव कृपा करें।

परम् पूज्य गुरुदेव : यह प्रश्न इस जगत् में सबसे श्रेष्ठ प्रश्न है। आजकल चाहे बच्चे हों, जवान हों या बूढ़े हों, सभी काम, धन, यश, वैभव के पीछे भाग रहे हैं। इस जगत् में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसकी कोई कामना नहीं होती है। जब भी कोई मानव परमात्मा की प्राप्ति का साधन पूछता है तो इसका अर्थ है कि उस व्यक्ति ने पूरी तरह से जगत् को देख लिया है, समझ लिया है क्योंकि अति श्रेष्ठ आदमी ही परमात्मा की प्राप्ति करने के साधन को तलाशता है, कामना करता है।

हमारे भगवान् महावीर, बुद्ध, सद्गुरु नानक, कबीर, रविदास, मीरा आदि ने इस संसार को नश्वर समझा, नाशवान् समझा। तत्पश्चात् उन्होंने वैसी साधना की, जिसके फलस्वरूप उन सभी को परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त हुआ। अन्यथा इस जगत्

८

प्रभु का अद्‌भुत न्याय

गुरुदास : परम पूज्य गुरुदेव, आमतौर पर जनसाधारण की यह मान्यता है और एक स्वाभाविक संशय भी है कि जो व्यक्ति धार्मिक है, धर्मपरायण है अथवा जिस व्यक्ति की ईश्वर में आस्था अधिक होती है, वह ही आमतौर पर अधिक पीड़ित होता है, व्यथित होता है, दु:खी होता है एवं भौतिक तथा सामाजिक दृष्टि से अभावग्रस्त भी होता है। ऐसा क्यों?

परम पूज्य गुरुदेव : ऐसा नहीं हैं यह केवल भ्रम है। आप यह कैसे कह सकते हैं कि इस जन्म में जो पुण्य वह कर रहा है, उसका सुफल उसे आगे आने वाले जीवन या जन्मों में क्या मिलेगा या कब मिलेगा? और अभी हाल में जो वह भुगत रहा है, क्या पता इस कर्मफल का किस जन्म जन्मांतर से संबंध जुड़ा हुआ है, जिसे इसी जन्म में भोगना निश्चित है। मानव जीवन में तीन प्रकार के कर्मों का समावेश रहता है-क्रियमान, प्रारब्ध एवं संचित। अब संचित कर्मों का जिस प्रकार उपयोग हो रहा